मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 7

MSK–001

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत) (एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.एस.के.-001 : संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के उत्तर एक ही भाषा में हों।*

भाग—क

1. अधोलिखित में से किसी **एक** की विस्तृत व्याख्या कीजिए : 20

वाक्यं स्याद् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः। योग्यता पदार्थानां परस्परसम्बन्धे बाधाभावः। पदोच्चयस्यैतदभावेऽपि

वाक्यत्वे 'वह्निना सिञ्चति' इत्याद्यपि वाक्यं स्यात्। आकाङ्क्षा प्रतीतिपर्यवसानविरहः। स च श्रोतुर्जिज्ञासारूपः। निराकाङ्क्षस्य वाक्यत्वे 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इत्यादीनामपि वाक्यत्वं स्यात्। आसत्तिः बुद्ध्यविच्छेदः। बुद्धिविच्छेदेऽपि वाक्यत्वे इदानीमुच्चारितस्य देवदत्तशब्दस्य दिनान्तरोच्चारितेन गच्छतीति पदेन सङ्गतिः स्यात्। आकाङ्क्षायोग्य-तयोरात्मार्थधर्मत्वेऽपि पदोच्चयधर्मत्वमुपचारात्। वाक्योच्चयो महावाक्यम्—योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्त इत्येव।

अथवा

विरतास्वभिधाद्यासु ययार्थो बोध्यते परः।

सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च॥

'शब्दबुद्धिकर्मणां विरम्य व्यापाराभावः' इति नयेनाभिधालक्षणातात्पर्याख्यासु तिसृणु वृत्तिषु स्वं स्वमर्थं बोधयित्वोपक्षीणासु यया अपरोऽन्योऽर्थो बोध्यते सा

शब्दस्यार्थस्य प्रकृतिप्रत्ययादेश्च शक्तिर्व्यञ्जनध्वननगमन प्रत्यायनादिव्यपदेशविषया व्यञ्जना नाम।

2. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामाः॥

(ख) त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलायाम्,
आत्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्त्तुम्।
अस्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः॥

(ग) वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां

सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः।

विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां

लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लौचनैर्वञ्चितोऽसि॥

(घ) विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः

सङ्गीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।

अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः

प्रासादास्त्वं तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः॥

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए :

2×10=20

(क) एतन्त्रु मां दहति यद् गृहमस्मदीयं

क्षीणार्थमित्यतिथयः परिवर्जयन्ति।

संशुष्कसान्द्रमदलेखमिव भ्रमन्तः

कालात्यये मधुकराः करिणः कपोलम्॥

(ख) एता हसन्ति च रुदन्ति च वित्तहेतोः

विश्वासयन्ति पुरुषं न तु विश्वसन्ति।

तस्मान्नरेण कुलशीलसमन्वितेन

वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः॥

(ग) त्यजति किल तं जयश्रीर्जहतिच मित्राणि बन्धुवर्गश्च।

भवति च सदोपहास्यो यः खलु शरणागतं त्यजति॥

(घ) यं समालम्ब्य विश्वासं न्यासोऽस्मासु तया कृतः।

तस्यै तन्महतो मूल्यं प्रत्ययस्यैव दीयते॥

भाग—ख

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $2\times10=20$

(i) खण्डकाव्य का लक्षण देते हुए उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ii) रूपक के उद्भव और विकास का वर्णन करते हुए प्रकरणरूपक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(iii) मम्मट के काव्यलक्षण में प्रयुक्त 'अदोषौ' पद के साहित्यदर्पणकार द्वारा किए गए खण्डन की विवेचना कीजिए।

(iv) "राजतरङ्गिणी एक ऐतिहासिक काव्य है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$2 \times 5 = 10$

(क) नान्दी

(ख) नायक के भेद

(ग) रस का स्वरूप

(घ) अविवक्षितवाच्य ध्वनि

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का चरित्र–चित्रण कीजिए :

$2 \times 5 = 10$

(क) चारुदत्त

(ख) मेघ

(ग) विदूषक

(घ) मदनिका

× × × × ×